॥ श्री गणेशाय नमः ॥

कुंडली मिलान

सैम्पल सैम्पल

28/7/1997 7:0AM

Gohana, Haryana , India

सैम्पल सैम्पल

26/10/1998 2:16AM

Pehowa, Haryana , India

सनातन ज्योति

कुंडली मिलान का महत्व

ज्योतिष शास्त्र, विश्व में और प्रत्येक प्राणी की जीवनधारा में हर पल घटने वाली संभाव्य घटनाओं का अनुमान के आधार पर संभाव्य विवरण प्रस्तुत करता है| गृहस्थ आश्रम में प्रवेश हेतु विवाह आवश्यक है|

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार किसी जातक की प्रकृति ,अभिरुचि ,उसका व्यक्तित्व और उसका व्यव्हार उसके जन्म नक्षत्र और राशी के आधार पर निर्धारित होता हैं। इसी आधार पर वर -वधु के जन्म नक्षत्र और जन्म राशी का मिलान करना गुण मिलान कहलाता हैं। गुण मिलान के आधार पर जाना जाता हैं की दोनों में परस्पर कैसा सम्बन्ध रहेगा।

कुंडली मिलान एक प्राचीन प्रणाली है जिसके द्वारा संभावित वर-वधू के आपसी तालमेल का आकलन किया जाता है। वर-वधू के वैवाहिक जीवन को सुखद और अनुकूल बनाने के लिए यह पहला कदम होता है। विवाह के उपरांत वर/कन्या को भविष्य में समस्याओं का सामना न करना पड़े इसलिए विवाह पूर्व वर/कन्या के माता-पिता, दोनों की जन्मकुण्डली का मिलान करवाते है, जोकि अति आवश्यक है|

प्रस्तुत कुंडली मिलान रिपोर्ट में सभी प्रमुख जन्मपत्रिका मिलान के विधियों का प्रयोग एवं विश्लेषण किया गया है। इनमे अष्टकूट मिलान, दशकूट मिलान, मांगलिक मिलान, रज्जु व वेध दोष विश्लेषण के साथ ही उनके फल भी दिए गए हैं।

सामान्य विवरण

सैम्पल	गुण	सैम्पल
28/7/1997	जन्म दिनांक	26/10/1998
7:0	जन्म समय	2:16
29 N 08	अक्षांश	29 N 58
76 E 41	देशांतर	76 E 35
+05:30	समय क्षेत्र	+05:30
5:41:12	सूर्योदय	6:32:37
19:17:47	सूर्यास्त	17:42:20
23:49:23	अयनांश	23:50:25

ज्योतिषीय विवरण

सैम्पल	गुण	सैम्पल
क्षत्रिय	वर्ण	क्षत्रिय
चतुष्पद	वश्य	मानव
मेष	योनि	स्वान
राक्षस	गण	राक्षस
अंत्य	नाड़ी	आदि
मंगल	राशि स्वामी	गुरु
कृतिका	नक्षत्र	मूल
सूर्य	नक्षत्र स्वामी	केतु
1	चरण	3
दंड	योग	अतिगण
गर	करण	बालव
कृष्ण नवमी	तिथि	शुक्ल पंचमी
पूर्वा	युञ्जा	प्रभाग
अग्नि	तत्त्व	अग्नि
आ	नामाक्षर	भ
लोहा	पाया	ताम्र

सैम्पल ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	कर्क	11:12:04	चन्द्र	पुष्य	शनि	1
चन्द्र	--	मेष	27:32:07	मंगल	कृतिका	सूर्य	10
मंगल	--	कन्या	25:54:28	बुध	चित्रा	मंगल	3
बुध	--	सिंह	07:28:47	सूर्य	मघा	केतु	2
गुरु	R	मकर	24:46:40	शनि	धनिष्ठा	मंगल	7
शुक्र	--	सिंह	11:36:18	सूर्य	मघा	केतु	2
शनि	--	मीन	26:31:09	गुरु	रेवती	बुध	9
राहु	R	सिंह	28:12:52	सूर्य	उत्तर फाल्गुनी	सूर्य	2
केतु	R	कुम्भ	28:12:52	शनि	पूर्व भाद्रपद	गुरु	8
लग्न	--	कर्क	27:03:03	चन्द्र	अश्लेषा	बुध	1

सैम्पल ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	तुला	08:23:45	शुक्र	स्वाति	राहु	3
चन्द्र	--	धनु	08:02:25	गुरु	मूल	केतु	5
मंगल	--	सिंह	17:15:37	सूर्य	पूर्व फाल्गुनी	शुक्र	1
बुध	--	तुला	26:48:13	शुक्र	विशाखा	गुरु	3
गुरु	R	कुम्भ	24:54:48	शनि	पूर्व भाद्रपद	गुरु	7
शुक्र	--	तुला	07:17:37	शुक्र	स्वाति	राहु	3
शनि	R	मेष	06:09:19	मंगल	अश्विनी	केतु	9
राहु	R	सिंह	04:06:48	सूर्य	मघा	केतु	1
केतु	R	कुम्भ	04:06:48	शनि	धनिष्ठा	मंगल	7
लग्न	--	सिंह	11:57:22	सूर्य	मघा	केतु	1

जन्म कुंडली

लग्न कुंडली

सैम्पल

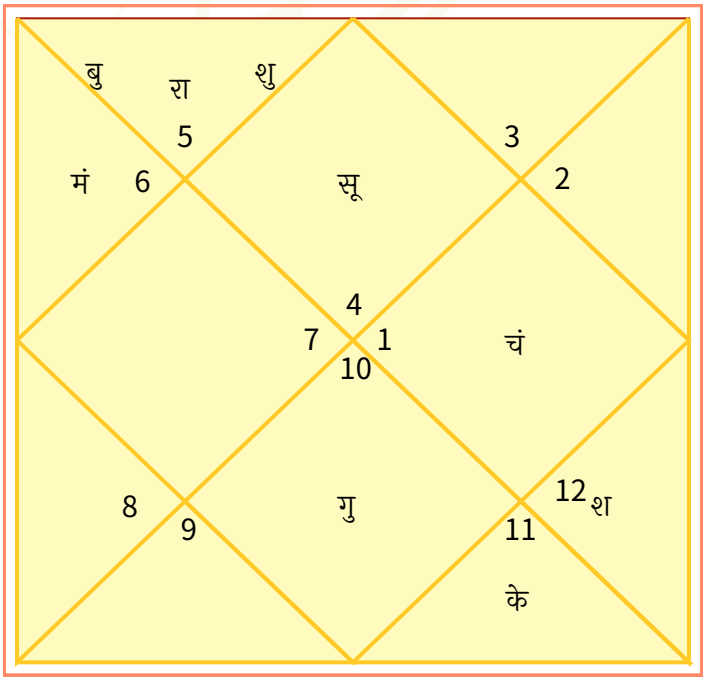

सैम्पल

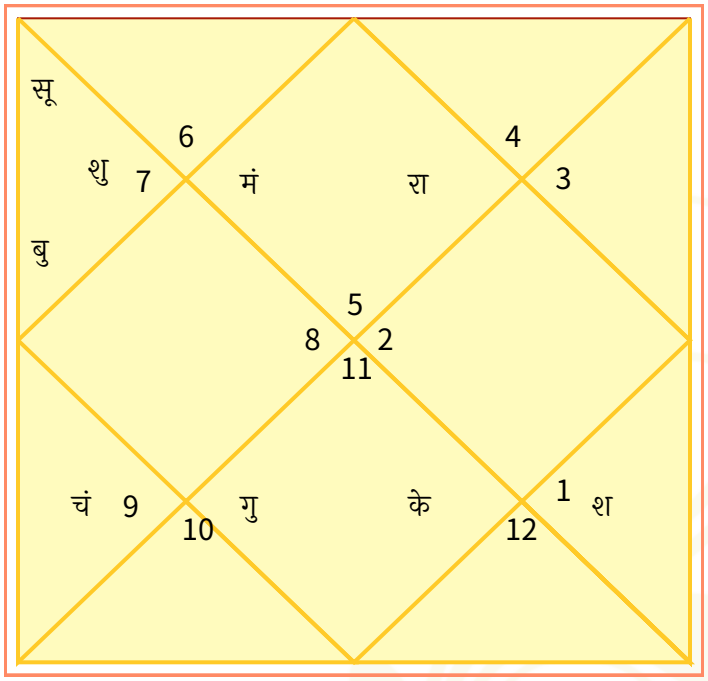

चलित कुंडली

सैम्पल

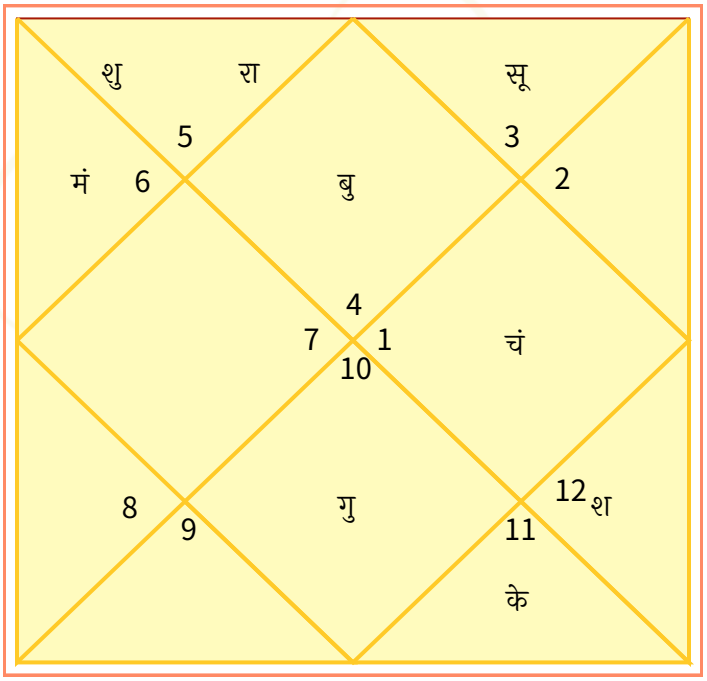

सैम्पल

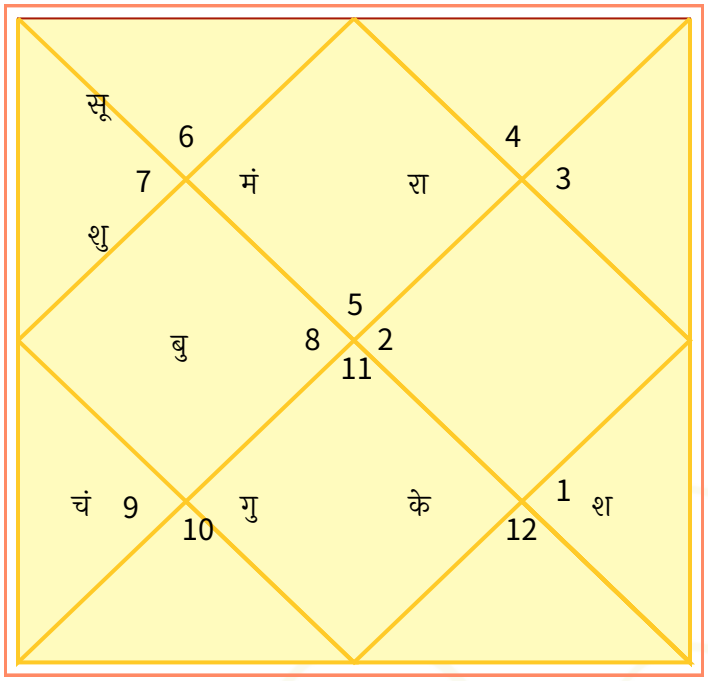

https://www.sanatanjyoti.com/

चंद्र कुंडली

सैम्पल

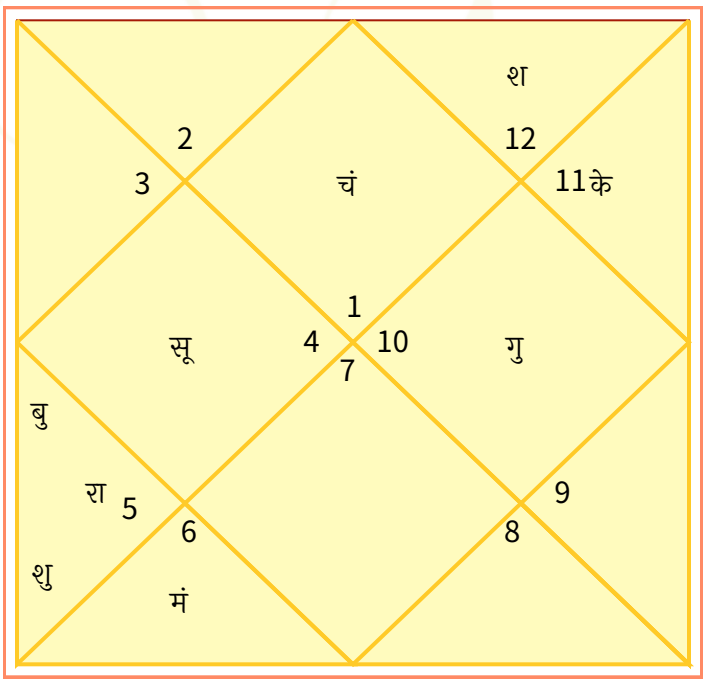

सैम्पल

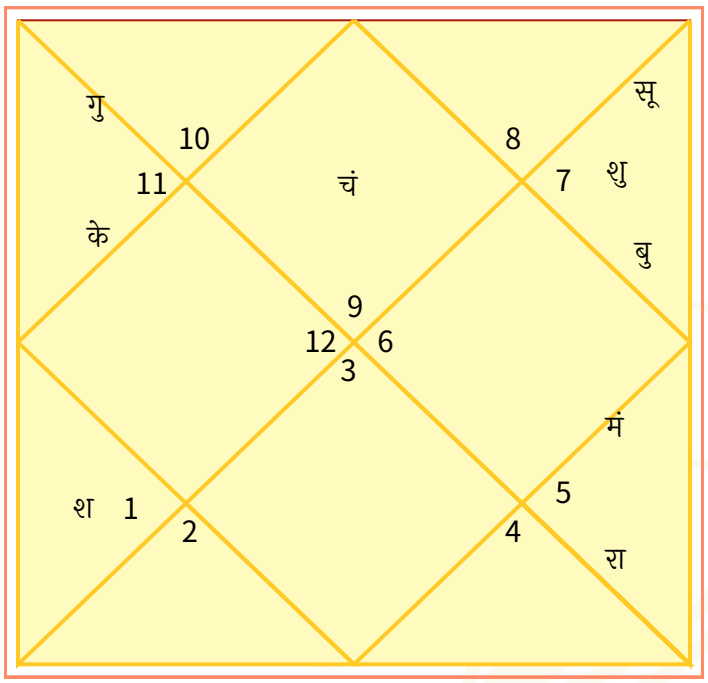

नवमांश कुंडली

सैम्पल

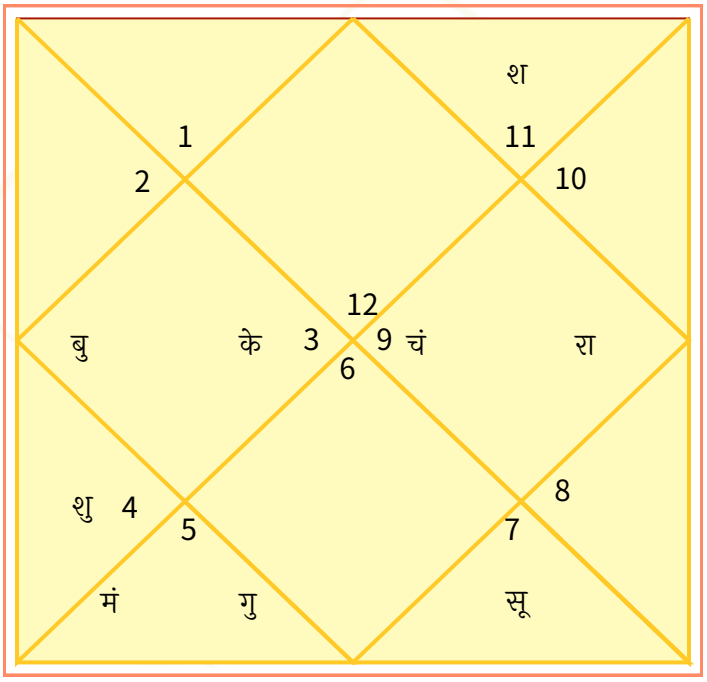

सैम्पल

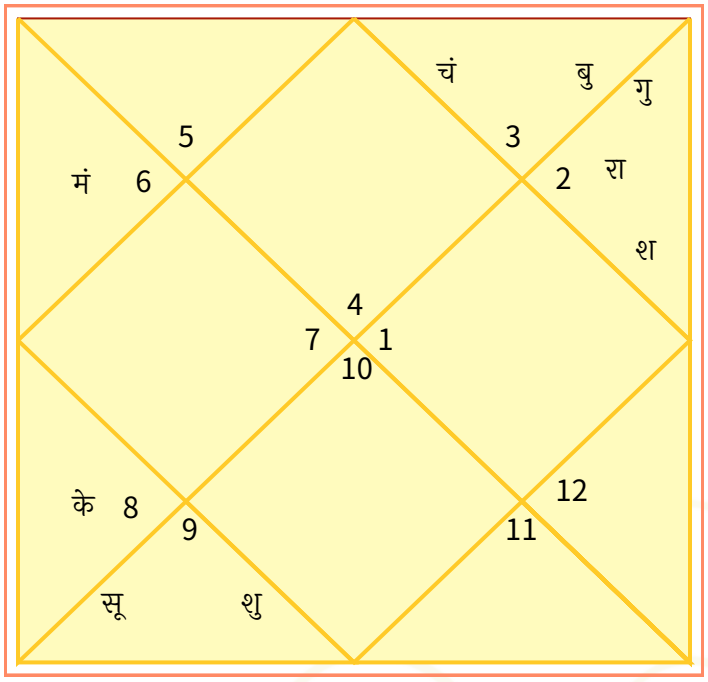

https://www.sanatanjyoti.com/

वर्त्तमान दशा

महादशा		अंतर दशा		प्रत्यंतर दशा	
--		राहु		राहु > शनि	
सूर्य	07-03-2003 23:32	राहु	18-11-2022 09:44	शनि	24-09-2025 19:48
चन्द्र	07-03-2013 11:32	गुरु	13-04-2025 00:08	बुध	19-02-2026 07:04
मंगल	07-03-2020 05:32	शनि	17-02-2028 23:14	केतु	21-04-2026 00:25
राहु	07-03-2038 17:32	बुध	06-09-2030 08:32	शुक्र	11-10-2026 12:16
गुरु	07-03-2054 17:32	केतु	24-09-2031 20:50	सूर्य	02-12-2026 13:25
शनि	07-03-2073 11:32	शुक्र	24-09-2034 14:50	चन्द्र	27-02-2027 07:21
बुध	07-03-2090 17:32	सूर्य	19-08-2035 08:14	मंगल	29-04-2027 00:41
केतु	07-03-2097 11:32	चन्द्र	17-02-2037 05:14	राहु	02-10-2027 04:09
शुक्र	08-03-2117 11:32	मंगल	07-03-2038 17:32	गुरु	17-02-2028 23:14

सूक्ष्म दशा

राहु > शनि > शनि

शनि	09-05-2025 02:27
बुध	01-06-2025 10:50
केतु	11-06-2025 01:35
शुक्र	08-07-2025 12:51
सूर्य	16-07-2025 18:38
चन्द्र	30-07-2025 12:17
मंगल	09-08-2025 03:01
राहु	02-09-2025 20:22
गुरु	24-09-2025 19:48

https://www.sanatanjyoti.com/

प्राण दशा

राहु > शनि > शनि > राहु

राहु	12-08-2025 20:01
गुरु	16-08-2025 03:08
शनि	20-08-2025 01:05
बुध	23-08-2025 13:09
केतु	24-08-2025 23:45
शुक्र	29-08-2025 02:39
सूर्य	30-08-2025 08:19
चन्द्र	01-09-2025 09:46
मंगल	02-09-2025 20:22

https://www.sanatanjyoti.com/

वर्त्तमान दशा

महादशा	
--	
केतु	06-08-2001 00:52
शुक्र	06-08-2021 00:52
सूर्य	06-08-2027 12:52
चन्द्र	06-08-2037 00:52
मंगल	05-08-2044 18:52
राहु	06-08-2062 06:52
गुरु	06-08-2078 06:52
शनि	06-08-2097 00:52
बुध	07-08-2114 06:52

अंतर दशा	
सूर्य	
सूर्य	23-11-2021 14:40
चन्द्र	25-05-2022 05:40
मंगल	30-09-2022 01:46
राहु	24-08-2023 19:10
गुरु	11-06-2024 23:58
शनि	24-05-2025 23:40
बुध	31-03-2026 10:46
केतु	06-08-2026 06:52
शुक्र	06-08-2027 12:52

प्रत्यंतर दशा	
सूर्य > बुध	
बुध	07-07-2025 23:15
केतु	26-07-2025 01:53
शुक्र	15-09-2025 19:44
सूर्य	01-10-2025 08:18
चन्द्र	27-10-2025 05:13
मंगल	14-11-2025 07:52
राहु	30-12-2025 21:32
गुरु	10-02-2026 07:01
शनि	31-03-2026 10:46

सूक्ष्म दशा	
सूर्य > बुध > शुक्र	
शुक्र	03-08-2025 16:52
सूर्य	06-08-2025 06:57
चन्द्र	10-08-2025 14:27
मंगल	13-08-2025 14:53
राहु	21-08-2025 09:10
गुरु	28-08-2025 06:45
शनि	05-09-2025 11:22
बुध	12-09-2025 19:18
केतु	15-09-2025 19:44

https://www.sanatanjyoti.com/

प्राण दशा

सूर्य > बुध > शुक्र > गुरु

गुरु	22-08-2025 07:14
शनि	23-08-2025 09:27
बुध	24-08-2025 08:55
केतु	24-08-2025 18:34
शुक्र	25-08-2025 22:10
सूर्य	26-08-2025 06:27
चन्द्र	26-08-2025 20:15
मंगल	27-08-2025 05:54
राहु	28-08-2025 06:45

https://www.sanatanjyoti.com/

मांगलिक दोष क्या होता है

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

कुण्डली में जब लग्न भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं। अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलीक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्न में स्थित होने से सप्तम भाव और अष्टम भाव दोनों भावों को दृष्टि देता है। चतुर्थ भाव में मंगल के स्थित होने से सप्तम भाव पर मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। द्वादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रूप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते है। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विनाशकारी प्रभावों, सर्वारिष्ट को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

मांगलिक दोष प्रभाव

मंगल ग्रह की पहले भाव में स्थिति:

लग्न में मंगल हो तो स्वास्थ्य पर दुषप्रभाव पड़ता हैं, व्यक्ति स्वभाव से उग्र एवं जिद्दी होता है। मंगल के दुश प्रभाव से पति या पत्नी से दूरियां अथवा तलाक भी हो सकता है ! सातवी दृष्टि के कारण जीवन साथी को किसी धारदार हथियार से चोट की आशंका भी बनी रहती है !

मंगल ग्रह की द्वितीय भाव में स्थिति :

मंगल दुसरे स्थान पर होने से परिवार में सदस्यों की बढ़ोतरी नहीं होती ! इस प्रकार या तो विवाह देर से होता है या होता ही नहीं, कई बार विवाह के उपरान्त संतान उत्पत्ति में रूकावटे आती है!

मंगल ग्रह की चतुर्थ भाव में स्थिति:

इस घर में मंगल के दुश प्रभाव से जातक के विवाहित जीवन में आने वाली खुशियाँ मनो ख़त्म सी हो जाती है, विवाह हो जाने के बावजूद विवाह का सुख नहीं मिलता ! चौथे भाव पर मंगल के दुश प्रभाव से जीवन साथी से दूरियां अथवा तलाक भी हो सकता है !

मंगल ग्रह की सप्तम भाव में स्थिति:

सातवें स्थान में स्थिति मंगल दाम्पत्य सुख (रति सुख) की हानि तथा पत्नी के स्वास्थ्य को भी हानि पहुँचाता है। इस स्थान में स्थित मंगल की दशवें एवं दूसरे भाव पर दृष्टि पड़ती है। दशम से अजीविका का तथा द्वितीय स्थान से कुटुम्ब का विचार किया जाता है। अतः इस स्थान में स्थित मंगल आजीविका एवं कुटुम्ब पर भी अपना प्रभाव डालता है।

मंगल ग्रह की अष्टम भाव में स्थिति:

कुंडली का आठवा घर जीवन साथी की उम्र से सम्बंधित होता है ! इस घर में मंगल के आने से जीवन साथी की कम आयु का खतरा बना रहता है! इस प्रकार आठवे घर में मंगल दोष होने से विवाहित जीवन पर दुश प्रभाव पड़ता है!

मंगल ग्रह की बारहवे भाव में स्थिति:

जिस जातक की कुंडली के बारहवे घर में मंगल होता है वह जातक अधिक व्याभिचारी होता है, जिस कारण से जातक कई लोगो के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाता है तथा किसी भयंकर गुप्त अंगो की बिमारी से ग्रिस्त हो जाता है!

https://www.sanatanjyoti.com/

सैम्पल मांगलिक विश्लेषण

भाव के आधार पर

सूर्य लग्न भाव में कुंडली में स्थित है।

राहु आपके कुंडली में द्वितीय भाव में है।

केतु आपके कुंडली में अष्टम भाव में है।

दृष्टि के आधार पर

आपके कुंडली का चतुर्थ भाव केतु से दृष्ट है।

केतु की दृष्टि आपके कुडंली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

आपके कुंडली के द्वादश भाव को केतु देख रहा है।

राहु , आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है।

सप्तम भाव सूर्य से दृष्ट है।

मांगलिक विश्लेषण

कुल मांगलिक प्रतिशत	20.5%

मांगलिक फल

कुंडली में मांगलिक दोष है परन्तु मांगलिक दोष का प्रभाव बहुत कम होने से किसी हानि की अपेक्षा नहीं है । कुछ साधारण उपायो की मदद से इसे और कम किया जा सकता है।

सैम्पल मांगलिक विश्लेषण

भाव के आधार पर

लग्न भाव में मंगल अवस्थित है।

राहु आपके कुंडली में लग्न भाव में है।

केतु आपके कुंडली में सप्तम भाव में है।

दृष्टि के आधार पर

आपकी कुंडली में लग्न भाव को केतु देख रहा है।

राहु , आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

मंगल , आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है।

सप्तम भाव मंगल से दृष्ट है।

सप्तम भाव राहु से दृष्ट है।

आपके कुंडली का चतुर्थ भाव मंगल से दृष्ट है।

मांगलिक विश्लेषण

कुल मांगलिक प्रतिशत	30.75%

मांगलिक फल

कुंडली में मांगलिक दोष है और प्रभावी है, मिलान के समय इसका ध्यान रखे। आप मांगलिक हैं ।

सैम्पल मांगलिक विवरण

कुल मांगलिक प्रतिशत - 20.5%

सैम्पल मांगलिक विवरण

कुल मांगलिक प्रतिशत - 30.75%

मांगलिक मिलान परिणाम

लड़का मांगलिक नहीं है। लड़की, हालांकि, मांगलिक है। इस अंतर के कारण आपसी असहमति, विवाद, जुदाई, आदि जैसे परिणाम हो सकते हैं। इसलिए, इस सम्बन्ध के लिखी सलाह नहीं दी जा सकती है।

अष्टकूट विवरण

अष्टकूट क्या होता है?

कुण्डली मिलान की अष्टकूट पद्धति में, गुणों की अधिकतम संख्या ३६ है। वर और कन्या के बीच गुण अगर ३१ से ३६ के मध्य में हो तो उनका मिलाप अति उत्तम होता है। गुण अगर २१ से ३० के मध्य में हो तो वर और कन्या का मिलाप बहुत अच्छा होता है। गुण अगर १७ से २० के मध्य में हो तो वर और कन्या का मिलाप साधारण होता है और गुण अगर ० से १६ के मध्य में हो तो इसे अशुभ माना जाता है।

आठो कूट इस प्रकार से हैं - १) वर्ण २) वश्य ३) तारा ४) योनि ५) ग्रह मैत्री ६) गण ७) भकूट और ८) नाडी

वर्ण	वश्य	तारा	योनि
ग्रह मैत्री	गण	भकूट	नाड़ी

अष्टकूट मिलान विधि:

अष्टकुट मतलब ८ अलग-अलग कुटो का मिलान। इन सभी कुटो के मिलान में जन्म नक्षत्र और जन्म राशि का उपयोग किया जाता है।

अष्टकूट के आठों कूट इस प्रकार हैं :

वर्ण – जातक के वर्ण से उसकी कार्य क्षमता , व्यक्तित्व , आचरण- व्यावहार तथा उससे जुड़ी हुई कई प्रमुख बातों का पता चल जाता है ।

वश्य – वर / कन्या की अभिरुचि तथा शारीरिक ,मानसिक ,भावनात्मक प्रकृति को दर्शाता है ।

तारा – तारा कूट वर – कन्या के वैचारिक मतभेद , विरोधात्मकता , धन की स्थिति व आपसी रिश्तों में सहजता को दर्शाता है ।

योनि – योनी वर - कन्या के आपसी व्यावहार विचार , रहन-सहन ,इत्यादि को दर्शाता है । यह शारीरिक आकर्षण तथा लैंगिक अनुकूलता (मूल वृत्ती) भी दर्शाता है ।

ग्रह मैत्री – यह दर्शाता है वर-कन्या की मनोवृत्ती एवं स्वभाव के तालमेल को । ग्रह मैत्री मनोवैज्ञानिक स्वभाव के विश्लेषण का सबसे अच्छा उपकरण है ।

– गण दर्शाता है , परस्पर प्रेम , सामंजस्य , सौमनस्यता, मनोदशा , एक दूसरे के प्रति आकर्षण और लगाव को ।

भकूट – यह दर्शाता है : पारस्परिक आकर्षण , अनुराग , आसक्ति स्नेह एवं रचनात्मकता तथा सृजनात्मकता ।

नाड़ी – दर्शाता है – हर्षोउल्लास का संतुलन , नाड़ी अर्थात – नब्ज जो हमारे शरीर की तांत्रिक उर्जा का प्रतिनिधि होता है तथा स्मरणशक्ति चेतना का संचालन यहीं से होता है ।

https://www.sanatanjyoti.com/

गुण	विवरण	पुरुष	स्त्री	कुल	प्राप्त
वर्ण	कार्य क्षमता और व्यक्तित्व	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1
वश्य	व्यक्तिगत संबंध	चतुष्पद	मानव	2	1
तारा	समृद्धि और भाग्य	कृतिका	मूल	3	1.5
योनि	अंतरंग सम्बन्ध	मेष	स्वान	4	1
ग्रह मैत्री	मैत्री मेल	मंगल	गुरु	5	5
गण	सामाजिक दायित्व	राक्षस	राक्षस	6	6
भकूट	रचनात्मक क्षमता	मेष	धनु	7	0
नाड़ी	संतान	अंत्य	आदि	8	8
कुल	-	-	-	36	23.5

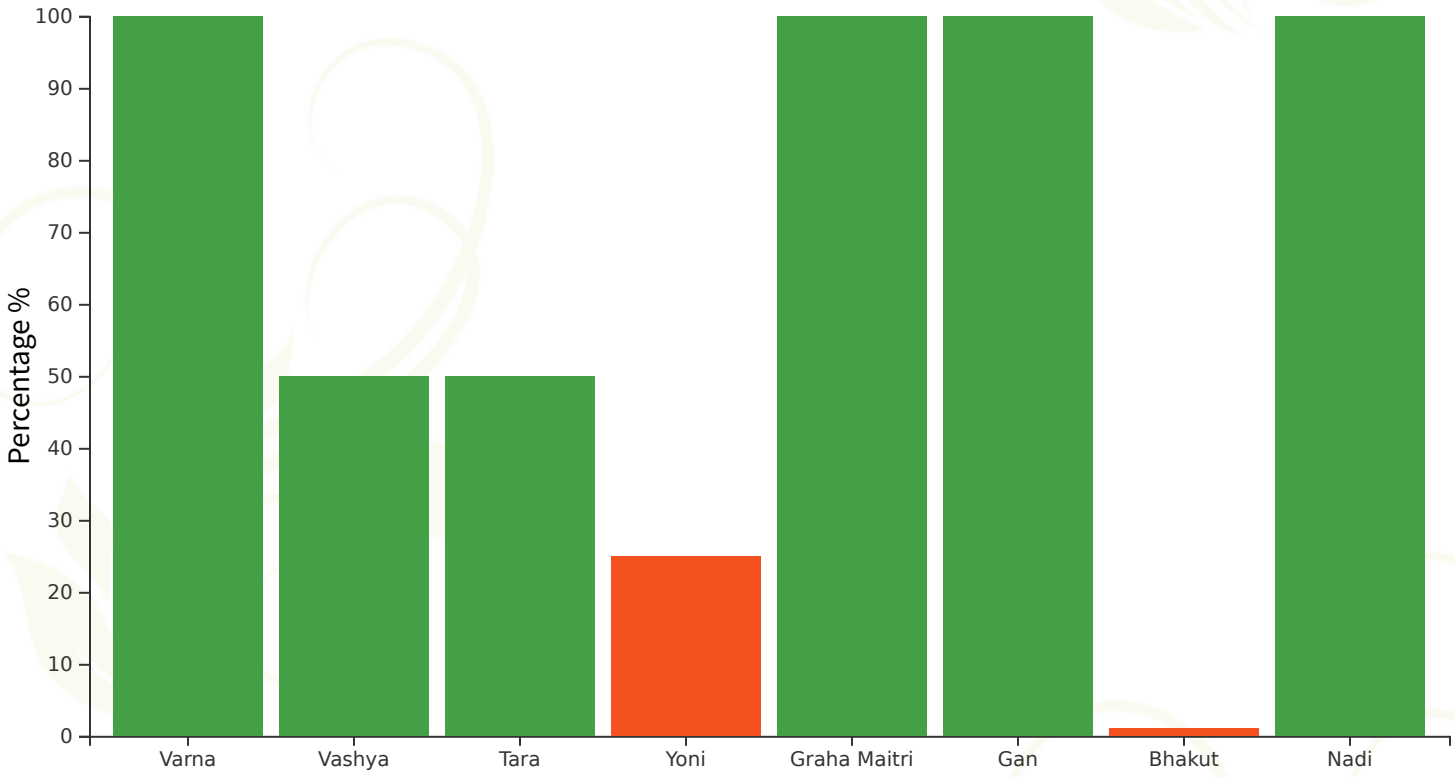

https://www.sanatanjyoti.com/

दशकूट क्या होता है

एक लंबे और सुखी विवाहित जीवन को सुनिश्चित करने के लिए, प्राचीन भारतीय ऋषियों और संतों ने विवाह अनुकूलन योग्यता या विवाहयोग्य संगतता को जांचने के लिए एक विधि तैयार की जिसे कुंडली मिलान कहा जाता है। उन्होंने पुरुष और स्त्री के जन्म नक्षत्रो को लेकर कूट मिलान विधि तैयार की। शुरुआत में कुल २० कुटो का उपयोग मिलान पद्धति में किया जाता था। लेकिन इन २० कुटो में से केवल १० कुट ही वास्तव में कुंडली मिलान के लिए उपयोगी थे। भारत के कुछ हिस्सों में केवल 8 कूट को लेकर ही कुंडली मिलान किया जाता है। दसकुट मिलान की विधि को हिंदी में दश पोरिथम और तमिल में १० पॉरुथम कहा जाता है।

दसो कूट इस प्रकार से हैं - १) दीन २) गण ३) योनि ४) राशि ५) राश्याधिपति ६) रज्जू ७) वेध ८) वश्य ९) महेन्द्रं और ८) स्त्रिदिर्घ

दीन	गण	योनि	राशि
राश्याधिपति	रज्जु	वेध	वश्य
महेंद्र	स्त्री दीर्घ		

दशकूट नीचे दिए गए प्रकार से है :

दीन – तारा कूट वर – कन्या के वैचारिक मतभेद , विरोधात्मकता , धन की स्थिति व आपसी रिश्तों में सहजता को दर्शाता है ।

गण – गण दर्शाता है , परस्पर प्रेम , सामंजस्य , सौमनस्यता, मनोदशा , एक दूसरे के प्रति आकर्षण और लगाव को ।

योनि – योनी वर - कन्या के आपसी व्यावहार विचार , रहन-सहन ,इत्यादि को दर्शाता है । यह शारीरिक आकर्षण तथा लैंगिक अनुकूलता (मूल वृत्ती) भी दर्शाता है ।

राशि – यह दर्शाता है : पारस्परिक आकर्षण , अनुराग , आसक्ति स्नेह एवं रचनात्मकता तथा सृजनात्मकता ।

राश्याधिपति – यह दर्शाता है वर-कन्या की मनोवृत्ती एवं स्वभाव के तालमेल को । ग्रह मैत्री मनोवैज्ञानिक स्वभाव के विश्लेषण का सबसे अच्छा उपकरण है ।

रज्जु – यह दस कुटो में सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि यह पति के लिए एक लंबा जीवन सुनिश्चित करता है।

वेध – वेध का मतलब दु:ख है विवाहित जीवन में सभी बुराइयों और नुकसान कारक होगा अगर कुंडली मिलान में वेध दोष उपस्थित है।

वश्य – वर / कन्या की अभिरुचि तथा शारीरिक ,मानसिक ,भावनात्मक प्रकृति को दर्शाता है ।

महेंद्र – दर्शाता है – हर्षोउल्लास का संतुलन , नाड़ी अर्थात – नब्ज जो हमारे शरीर की तांत्रिक उर्जा का प्रतिनिधि होता है तथा स्मरणशक्ति चेतना का संचालन यहीं से होता है ।

स्त्री दीर्घ – यह धन और समस्त समृद्धि का संचय सुनिश्चित करता है।

https://www.sanatanjyoti.com/

गुण	पुरुष	स्त्री	कुल	प्राप्त
दीन	कृतिका	मूल	3	0
गण	राक्षस	राक्षस	4	4
योनि	मेष	स्वान	4	1
राशि	मेष	धनु	7	0
राश्याधिपति	मंगल	गुरु	5	5
रज्जु	-	-	5	5
वेध	कृतिका	मूल	2	2
वश्य	चतुष्पद	मानव	2	1
महेंद्र	कृतिका	मूल	2	0
स्त्री दीर्घ	कृतिका	मूल	2	0
कुल	-	-	36	18

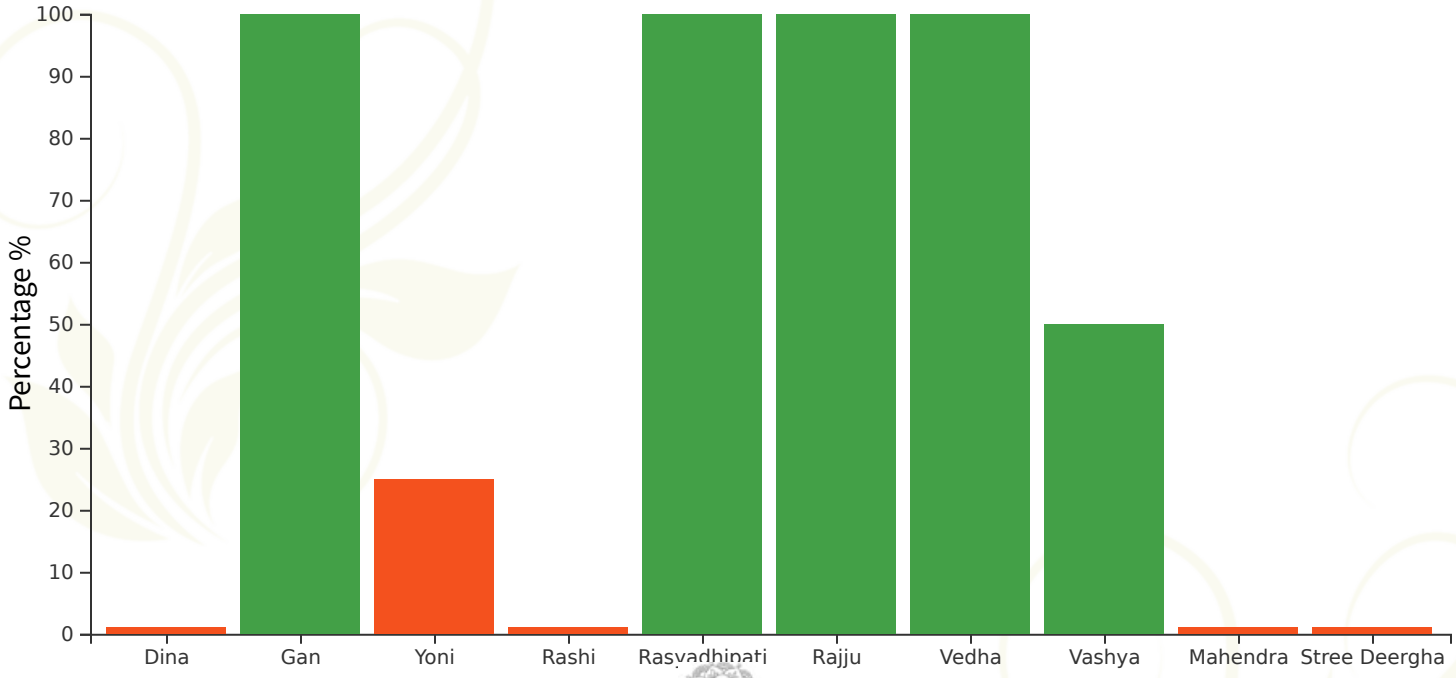

https://www.sanatanjyoti.com/

वेध दोष क्या होता है ?

वेध तकनीक का प्रयोग जोड़ी के पूरी तरह से एक साथ आने से रोकने वाले अत्यधिक अवरोधों के निर्धारण के लिए किया जाता है। रिश्ते को प्रभावित कर सकने वाले दो प्रमुख महा-दोषो में से एक है।

वेध दोष विश्लेषण

उपस्थित नहीं है।

लड़के के नक्षत्र और लड़की के नक्षत्र के बीच में कोई वेध दोष है।

भकूट क्या होता है?

भकूट राशियों के अंतर पर आधारित होता है भकूट का अर्थ ही है , राशियों का समूह भकूट को अधिकतम 7 गुण दिए गए हैं । यह दर्शाता है : पारस्परिक आकर्षण , अनुराग , आसक्ति स्नेह एवं रचनात्मकता तथा सृजनात्मकता । वर- कन्या की राशियाँ यदि एक दूसरे से 6 - 8 , 5 – 9 या 2 – 12 हो तो भकूट दोष लगता है और 0 (शून्य) अंक प्राप्त होते हैं । उपर्युक्त तीनों दोषों को छोड़कर अन्य सभी जोड़ियों को 7 अंक प्राप्त है ।

भकूट दोष विश्लेषण

सैम्पल
मेष

सैम्पल
धनु

इस मिलान में भकूट दोष उपस्थित है ,क्योंकि पुरुष की राशि मेष है और स्त्री की राशि धनु है।

भकूट दोष कट रहा है क्योंकि दोनों ही जातकों की ग्रहो की मैत्री अच्छी है।

https://www.sanatanjyoti.com/

नाड़ी क्या होता है?

नाड़ी : दर्शाता है – हर्षोउल्लास का संतुलन , नाड़ी अर्थात – नब्ज जो हमारे शरीर की तांत्रिक उर्जा का प्रतिनिधि होता है तथा स्मरणशक्ति चेतना का संचालन यहीं से होता है ।

नाड़ियाँ 3 प्रकार की होती है :1) आदय - वात नाड़ी, 2) मध्य - पित्त नाड़ी , 3)अन्त्य - कफ नाड़ी । वर और कन्या की नाड़ी भिन्न होनी चाहिए । यदि दोनों की नाड़ियाँ एक हुई तो कई दुष्परिणाम देखे जाते हैं , जैसे संतति से संबंधित परेशानियाँ । संतान शारीरिक , मानसिक रूप से अस्वस्थ रहती है , संतान में प्रखर बुद्धि , चेतना स्मरणशक्ति का अभाव रहता है ।

नाड़ी दोष उपस्थित होने पर क्या प्रभाव होता है

गुण मिलान करते समय यदि वर और वधू की नाड़ी अलग-अलग हो तो उन्हें नाड़ी मिलान के 8 में से 8 अंक प्राप्त होते हैं, जैसे कि वर की आदि नाड़ी तथा वधू की नाड़ी मध्या अथवा अंत। किन्तु यदि वर और वधू की नाड़ी एक ही हो तो उन्हें नाड़ी मिलान के 8 में से 0 अंक प्राप्त होते हैं तथा इसे नाड़ी दोष का नाम दिया जाता है। नाड़ी दोष की प्रचलित धारणा के अनुसार वर-वधू दोनों की नाड़ी आदि होने की स्थिति में तलाक या अलगाव की प्रबल संभावना बनती है तथा वर-वधू दोनों की नाड़ी मध्य या अंत होने से वर-वधू में से किसी एक या दोनों की मृत्यु की प्रबल संभावना बनती है।

नाड़ी दोष विश्लेषण

सैम्पल
अंत्य

सैम्पल
आदि

नाडी दोष उपस्थित नहीं है।

https://www.sanatanjyoti.com/

रज्जु दोष क्या होता है?

This indicates the strength or duration or married life and therefore it merits special attention. The 27 constellations have been grouped into five types of Rajju. Padarajju - Aswini, Aslesha, Makha, Jyestha, Mula, Revati. Katirajju - Bharani, Pushyami, Purva, Anuradha, Poorvashadha, Uttarabhadra. Nabhi or Udararajju - Krittika, Punarvasu, Uttara, Visakha, Uttarashadha, Poovabhadra. Kantarajju - Rohini, Aridra, Hasta, Swati, Sravana, and Satabhisha. Sirorajju - Dhanistha, Chitta and Mrigasira. The Janma Nakshatras of the couple should not fall in the same Rajju. If they fall in Sira (head) husband's death is likely; if in Kantha (neck) the wife may die; if in Udara (stomach) the children may die; if in Kati (waist) poverty may ensue; and if in Pada (foot) the couple may be always wandering. Hence, it is desirable that the boy and the girl have constellations belonging to different rajjus or groups for safety in household life.

रज्जु दोष विश्लेषण

Not Present

कोई रज्जू दोष मौजूद नहीं है। इसलिए,लड़की और लड़के के बीच के मेल को अच्छा और शुभ माना जाता है।

अष्टकूट विश्लेषण - I

कार्य क्षमता और व्यक्तित्व

वर्ण - 1/1

सहयोग मिलने के कारण कार्य क्षमता में इजाफ़ा होता रहेगा । संघर्ष करने की क्षमता में मानसिक रूप से सहयोग मिलेगा । भौतिक कार्य क्षेत्र, दोनों के लिए अच्छा रहेगा एवं जीवन सुखमय रहेगा ।

व्यक्तिगत संबंध

वश्य - 1 / 2

आपसी मतभेद के कारण भावनात्मक रूप से रिश्ते में प्रेम का अभाव रहेगा । शरीरिक रूप से भी दोनों एक-दूसरे के लिए आकर्षण का केंद्र नहीं हो पाएँगे । मानसिक रूप से भी एक- दूसरे के प्रति सुलझे हुए नहीं रहेंगे ।

समृद्धि और भाग्य

तारा - 1.5 / 3

धन की स्थिति सामान्य रहेगी । यह भी एक कारण होगा की दोनों में वैचारिक मतभेद बना रहेगा । समृद्धि में वृद्धि नहीं होगी । दोनों में कई बातों को लेकर विरोध होते रहेंगे । रिश्तों में सहजता नहीं रहेगी एवं संबंध में निरसता बनी रहेगी ।

अंतरंग सम्बन्ध

योनि - 1 / 4

इनके बीच सामान्य आकर्षण रहेगा । बहुत अधिक एक-दूसरे को आकर्षित नहीं कर पाएँगे । सेवाभाव, स्वभाव के बावजूद भी दोनों उतने अनुकूल नहीं होंगे एक-दूसरे के लिए । संबंध सामान्य रहेगा ।

https://www.sanatanjyoti.com/

अष्टकूट विश्लेषण - II

मैत्री मेल

ग्रह मैत्री - 5 / 5

ाहसी गुण बना रहेगा । दोनों के ही स्वभाव में समानता बनी रहेगी । राष्ट्रहित के बारे में सोचेंगे । आपसी व्यवहार मित्रवत होगा । राष्ट्र के लिए साहसिक कार्य करेंगे । बौद्धिक कार्यों में विशेष रुचि लेंगे ।

सामाजिक दायित्व

गण - 6 / 6

अतिश्रेष्ठ संबंध, परस्पर प्रेम एक-दूसरे की मनोभावनाओं को समझेंगे । एक-दूसरे के बीच सामंजस्य की स्थिति होगी बनी रहेगी । हमेशा एक-दूसरे के प्रति आकर्षण बना रहेगा, आकर्षण प्रबल रहेगा एवं दोनों एक-दूसरे के लिए बिलकुल उपयुक्त होंगे ।

रचनात्मक क्षमता

भकूट - 0 / 7

गर्भ हानी होगी । आपसी प्रेम, अनुराग बना रहेगा । सृजनात्मक कार्य कम ही होंगे । दोनों में आंतरिक उर्जा की अधिकता रहेगी । जिसके कारण संबंध अच्छा रहेगा । पापस्परिक आकर्षण बना रहेगा ।

दोष कट रहा है ? - हाँ

संतान

नाड़ी - 8 / 8

दोनों प्रसन्न रहेंगे, ख़ुशी ख़ुशी रहेंगे स्वास्थ्य संबंधी कोई समस्या नहीं रहेगी संतान संबंधी समस्या भी नहीं रहेगी । दोनों में संतुलन बना रहेगा और संबंध की स्थिति उत्तम रहेगी, अच्छी रहेगी ।

पापसम्यम

Papa (dosha) Comparison is done here by assigning points for the position of Mars, Saturn, Rahu, Ketu and Sun with respect to Lagna, Moon as well as Venus.

सैम्पल पाप अंक

पाप अंक	लग्न से		चंद्र से		शुक्र से	
	स्थान	पाप	स्थान	पाप	स्थान	पाप
सूर्य	1	4.5	4	4.5	12	1.5
मंगल	3	0	6	0	2	12
शनि	9	0	12	3	8	18
राहु	2	3	5	0	1	3
कुल	--	7.5	--	3.75	--	8.625

सैम्पल पाप अंक

पाप अंक	लग्न से		चंद्र से		शुक्र से	
	स्थान	पाप	स्थान	पाप	स्थान	पाप
सूर्य	3	0	11	0	1	7.5
मंगल	1	9	9	0	11	0
शनि	9	0	5	0	7	18.75
राहु	1	3	9	0	11	0
कुल	--	12	--	0	--	6.5625

पापसम्यम निष्कर्ष

पापसम्यम शुभ है।

https://www.sanatanjyoti.com/

सैम्पल व्यक्तित्व विवेचना

कैंसर लग्न के व्यक्ति औसत से कम हौसले वाले, दूसरों के प्रति सहानुभूति रखने वाले,दयालु, धैर्यवान, सुस्त स्वभाव वाले,औरों का पालन-पोषण करने वाले, ग्रहणशील, रक्षात्मक , तीव्र , अस्थिर, मानसिक, भावनात्मक, अटल , कायर भावुक, शांत, संग्रहशील (बिना ज़रूरत के भी सामान एकत्र करने वाले) और तुनकमिजाज होते हैं, और औसत से कम जिंदादिल होते हैं ।

केकड़ा कर्क लग्न का प्रतिनिधित्व करता है,जैसे वो चलते समय कभी आगे और कभी पीछे देखता है, वैसे ही आप को एक ही समय में भविष्य और भूतकाल के विषय में सोचने की आदत है।

> “आप पूरी तरह से भविष्य का सामना नहीं करना चाहते हैं और हमेशा अतीत के बारे में चिंतित रहते हैं और यह सोच कर कि भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है,आप अधिक चिंतित रहते हैं।

आप का जीवन कभी भी सरल और सीधा नहीं होगा ,अपितु आप अलग और निराले ढंग से जीवन के रास्ते पर चलेंगे।

आप संवेदनशील हैं और संकट के समय पीछे हट कर अपने आवरण में चले जाते हैं । चाहे कोई महत्वहीन बात ही क्यों न हो,आप भावनात्मक रूप से आसानी से आहत हो सकते हैं, और आप परिस्थितयों को व्यक्तिगत रूप ले सकते हैं ।

सैम्पल व्यक्तित्व विवेचना

सिंह लग्न के व्यक्ति, उदार अभिमानी, भावुक, रोमांटिक, बहिर्मुखी, निष्प्रभावी , घमंडी, साहसी, संवेदनशील , आत्म-विश्वासी और आडम्बरी होते हैं और वे जहाँ भी जाते हैं और जो भी करते हैं उस में सफल होना चाहते हैं, सबसे आगे निकलना चाहते हैं ।

सिंह लग्न के व्यक्ति “शासन” करना पसंद करते हैं और अपने “राजसी व्यक्तित्व” के कारण सदा सम्मान प्राप्त करते हैं । आप जोखिम लेना पसंद करते हैं और कभी कभी दुसाह्सी हो सकते है, लेकिन आप को निश्चित रूप से जीवन निर्वाह में दिलचस्पी है।

> “कोंई आपके गौरव को चोट पहुंचाए या आप के प्रति कृतघ्नता प्रदर्शित करे ये आपके लिए अत्यंत दुःख की बात हो सकती है।

आप प्रेम के मामलों में अपनी भावनाएं खुलेआम प्रदर्शित करते है और आपको ऐसे एक साथी की जरूरत है जिस पर आप गर्व कर सकें –और यह भी चाहते हैं कि आपका साथी भी आप पर गर्व करे ।

आप जिन व्यक्तिओं से प्रेम करते हैं उनके प्रति वफादार और उन के रक्षक रहते हैं। आप तुनकमिजाज हो सकते हैं , लेकिन आप अधिक देर तक किसी से नाराज़ नहीं रह सकते । जीवन एक रंगमंच की तरह है और इसमे आप महान भूमिका निभाना पसंद करते हैं और आसपास होने वाली घटनाओं को अनुभव करते हैं ।

https://www.sanatanjyoti.com/

विशेषता - लक्षण

सकारात्मक लक्षण

सैम्पल

घरेलू | भावुक | अंतर्निहित मन | मेधावी

सैम्पल

क्रियाशील | स्वतंत्र विचारक | सक्रिय | साहसी

नकारात्मक लक्षण

सैम्पल

संकोची | आत्मविश्वास की कमी | अधीर | अतिभावुक

सैम्पल

अहंकारी | असहिष्णु | जिद्दी | अभिमानी

https://www.sanatanjyoti.com/

अष्टकूट

लड़का और लड़की की कुंडलियों के अष्टकूट मिलान से उन्हें 36 अँको में से 23.5 अंक प्राप्त हुए हैं. इसके अलावा, इनके राशि स्वामी भी एक दूसरे के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखते हैं - जिससे दोनों के बीच मानसिक अनुकूलता और आपसी स्नेह बना रहेगा। इसलिए, यह एक सकारात्मक मेल कहा जा सकता है।

दशकूट

लड़का और लड़की की कुंडलियों के दशकूट मिलान से उन्हें 36 अँको में से 18 अंक प्राप्त हुए हैं । जिससे दोनों के बीच मानसिक अनुकूलता और आपसी स्नेह बना रहेगा। इसलिए, यह एक सकारात्मक मेल कहा जा सकता है।

मांगलिक

लड़का मांगलिक नहीं है। लड़की, हालांकि, मांगलिक है। इस अंतर के कारण आपसी असहमति, विवाद, जुदाई, आदि जैसे परिणाम हो सकते हैं। इसलिए, इस सम्बन्ध के लिखी सलाह नहीं दी जा सकती है।

मिलान निष्कर्ष

> “ मंगल दोष मौजूद है; तथापि, अन्य कारकों के विश्लेषण के आधार पर, हम यह परामर्श करते हैं आप मंगल दोष निवारण हेतु सुझाए गए उपचारों का पालन करने के बाद ही विवाह के लिए आगे बढ़ सकते हैं।

सनातन ज्योति का उद्देश्य सनातन परंपराओं और मान्यताओं को जनमानस तक पहुंचाना है। सनातन किसी विशेष धर्म तक सीमित नहीं, बल्कि यह मानव कल्याण और पर्यावरण संरक्षण हेतु निस्वार्थ व समाज-स्वीकार्य कार्यों की व्यापक व्यवस्था है।

सनातन ज्योति

https://www.sanatanjyoti.com/
care@gauritechtrade.com